भैरवखण्ड के अलंकार

(1) आरोह- सा प म प ग म रे ग सा
म ग म रे ग सा, रे ध प ध म प ग म रे प
म प ग म रे, ग नि ध नि प ध म प
ग ध प ध म प ग, म सां नि सां
ध नि प ध म नि ध नि ध ध म।

अवरोह- सां म प म ध प नि ध सां प ध प
नि ध नि, नि ग म ग प म ध प नि म प
म ध प ध, ध रे ग रे म ग प म ध
ग म ग प म प, प सा रे सा ग रे
म ग प रे ग रे म ग म।

सम्पूर्ण जाति के रागों में अलंकार सरलता से बनाये जा सकते हैं किन्तु अन्य जाति के रागों में अपेक्षाकृत कठिनाई होती है। ~~काय~~ कारण यह है कि उसमें राग - नियम के अनुसार अलंकार के स्वर चुने जाते हैं। दूसरे कुछ अलंकार ऐसे हैं जो प्रत्येक राग की जाति में उपयुक्त नहीं बैठते हैं। उदाहरणार्थ उपर्युक्त अर्द्धजटिल अलंकार के अन्तर्गत प्रथम

अलंकार को देखिये। इसके गनि को कोमल करके अगर इसे भीमपलासी राग में गाना चाहें तो यह संभव नहीं, क्योंकि राग का रूप बिगड़ जायेगा। केवल भीमपलासी ही नहीं, अपितु बहुत से ऐसे राग हैं जिनमें केवल थोड़े ही अलंकार उपयुक्त बैठते हैं शेष नहीं। केवल सम्पूर्ण जाति वह भी सरल आरोह अवरोह के रागों में प्रत्येक अलंकार ठीक बैठता है। अलंकार का मुख्य प्रयोग तान और सरगम में होता है। अलंकारिक तानें सुनने में अच्छी लगती हैं और गायन में वैचित्र्य उत्पन्न करती हैं, वक्र जाति के रागों में या तो वक्रता कम करनी पड़ती है और या कुछ सीमित अलंकार ही प्रयोग किये जा सकते हैं अन्यथा राग हानि होगी।

Scanned with CamScanner